कलीसिया परिशिष्ट 14

[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]

स्वर्गदूत और आध्यात्मिक युद्ध

बाइबल स्वर्गदूतों के विषय में क्या सिखाती है?

परमेश्वर आम तौर पर मसीह, पवित्र आत्मा, बाइबल और कलीसिया के मसीहियों के माध्यम से काम करता है! परन्तु विशेष परिस्थितियों में, परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों के माध्यम से भी काम करता है। हम सीखेंगे कि स्वर्गदूत कौन हैं, वे यीशु मसीह से कैसे संबंधित हैं और मसीहियों और गैर-मसीहियों के साथ उनके क्या कार्य हैं।

क. स्वर्गदूत

1. स्वर्गदूतों की प्रकृति।

स्वर्गदूतों का उल्लेख पुराने नियम की 17 पुस्तकों में 108 बार और नए नियम की 17 पुस्तकों में 165 बार किया गया है। शब्द ष्स्वर्गदूतष (इब्रानी: मालअक, यूनानी: एंजेलोस) का अर्थ है "एक भेजा हुआ", "सन्देशवाहक", या "दूत"।

जब परमेश्वर ने ब्रह्मांड की रचना की, तो उन्होंने विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूत भी बनाए। स्वर्गदूत यीशु मसीह *द्वारा* और यीशु मसीह *के लिए* बनाए गए, अर्थात, मसीह के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए (कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 1:14)। स्वर्गदूतों को "परमेश्वर के पुत्र" भी कहा जाता है, क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा *बनाए* गए थे।

इसी प्रकार मसीहियों को "परमेश्वर के पुत्र" कहा जाता है, क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा *पुण:रचे* गए हैं (अय्यूब 1:6; रोमियों 8:9-16)। हालाँकि, उत्पत्ति 6:2 में, शब्द "परमेश्वर के पुत्र" स्वर्गदूतों को संदर्भित नहीं करते हैं, परन्तु विश्वासियों को, जबकि "पुरुषों की बेटियाँ" शब्द अविश्वासियों को संदर्भित करते हैं।

सृष्टि के क्रम में लोगों की तुलना में स्वर्गदूत ऊँचे हैं, परन्तु अनुग्रह के क्रम में लोगों की तुलना में नीचे हैं (इब्रानियों 2:7,16)। स्वर्गदूत "आध्यात्मिक प्राणी" हैं और उनके पास कोई मांस और हड्डी नहीं है (इब्रानियों 1:14; लुका 24:39)। वे *व्यक्ति* हैं, क्योंकि वे तर्क कर सकते हैं, बोल सकते हैं, चुन सकते हैं और कार्य कर सकते हैं। वे विवाह नहीं करते हैं और इसलिए न तो पुरुष हैं और न ही महिला (मरकुस 12:25)।

2. स्वर्गदूतों की संख्या।

यहोवा को अक्सर "सेनाओं का यहोवा" कहा जाता है (इब्रानी: याहवे सबाओत) (यशायाह 1:9)। "सेनाओं" उसके सिंहासन के चारों ओर स्वर्गदूतों की अगणनीय संख्या को संदर्भित करता है, जो उसकी परिषद का हिस्सा बनते हैं (1 राजा 22:19; अय्यूब 1:6; 15:8; यिर्मयाह 23:18,22), उसकी स्तुति गाते हैं (अय्यूब 38:7; भजन संहिता 148:2; लूका 2:13) और उसकी इच्छा पूरी करते हैं (भजन संहिता 103:20-21)।

प्रभु के पास स्वर्गदूतों की एक शक्तिशाली सेना है। "परमेश्वर के रथ दसियों हजारों हैं" (भजन संहिता 68:17)। वे अच्छी रीति से सुसज्जित हैं और टुकड़ियों में विभाजित हैं (लुका 2:13)। यीशु मसीह अपने पिता से सहायता माँग सकता है और तुरंत उसकी ओर से कार्य करने के लिए 12 से अधिक स्वर्गदूतों की सैन्य टुकड़ियाँ तैयार हैं (एक सैन्य टुकड़ी लगभग 4000 से 6000 है) (मत्ती 26:52-53; सीएफ। 2 राजा 6:17)! जब दानिय्येल और यूहन्ना "दस हजार गुना दस हजार स्वर्गदूतों" की बात करते हैं, तो वे कह रहे हैं कि परमेश्वर के स्वर्गदूत अगणनीय हैं (दानिय्येल 7:10; प्रकाशितवाक्य 5:11)।

3. स्वर्गदूतों की योग्यताएँ।

स्वर्गदूतों के पास एक *नैतिक* प्रकृति है, क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञा मानना या अवज्ञा करना चुन सकते हैं (2 पतरस 2:4)। उनके पास बुद्धि है, परन्तु वे *सर्वज्ञानी* (सब-जानना) *नहीं* हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के उद्धार की योजना के विषय में नहीं जानते थे, न ही उन्हें मसीह के दूसरे आगमन का समय पता है (2 शमूएल 14:17; 1 पतरस 1:11-12; मत्ती 24:36)। वे आनन्द, स्तुति के साथ गा सकते हैं और परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं (यशायाह 6:3; इब्रानियों 12:22; प्रकाशितवाक्य 5:11-14)।

कुछ स्वर्गदूतों को पंख होने के रूप में दर्शाया गया है और वे उड़ सकते हैं (भजन संहिता 18:10; प्रकाशितवाक्य 14:6)। वे आँधी की गति के साथ स्थानांतरण कर सकते हैं और आग की ताकत से परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं (यहेजकेल 1:14; इब्रानियों 1:7)। तथापि, वे *सर्वव्यापी* (प्रत्येक स्थान पर उपस्थित) *नहीं* हैं, क्योंकि वे एक समय पर केवल एक ही स्थान पर हो सकते हैं (दानिय्येल 9:23-23)। वे दुनिया के अभिमानी लोगों से अधिक से अधिक मजबूत हैं (2 पतरस 2:11), देशों के शैतान-राजकुमारों से अधिक मजबूत (दानिय्येल 10:13) और स्वयं शैतान से अधिक मजबूत हैं (प्रकाशितवाक्य 20:1-3)। तथापि, वे *सर्वशक्तिमान* (सर्व-शक्तिशाली) *नहीं* हैं, क्योंकि कुछ समय के लिए दुष्ट ताकतों द्वारा उनका सामना किया जा सकता है (दानिय्येल 10:12-14)। स्वर्गदूत परमेश्वर का चेहरा देखते हैं (मत्ती 18:10) और परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के उदाहरण हैं (भजन संहिता 103:20-21; मत्ती 6:10)।

4. स्वर्गदूतों का रूप।

स्वर्गदूतों आमतौर पर *अदृश्य* होते हैं (कुलुस्सियों 1:16), परन्तु वे *दृश्यमान* हो सकते हैं और *लोगों को दिखाई दे सकते हैं* (लूका 1:11)। कभी-कभी वे सामान्य पुरुषों के समान प्रकट होते हैं (उत्पत्ति 18:1), कभी-कभी उनके रूप में वे सफेद या चमकदार कपड़े पहने होते हैं (लुका 24:4; प्रेरितों के काम 1:10) और कभी-कभी उनका रूप मात्र विस्मयकारी और भयानक होता है (दानिय्येल10:5-11,15-19)। स्वर्गदूत सपनों में प्रकट हो सकते हैं (मत्ती 1:20), दर्शनों में (जकर्याह 1:8-11) और वास्तविक जीवन में (उत्पत्ति 18:1-19:22)। स्वर्गदूत आज भी लोगों के सामने प्रकट हो सकते हैं (इब्रानियों 13:2)!

5. स्वर्गदूतों के प्रकार।

स्वर्गदूत दो प्रकार के होते हैं, परमेश्वर के स्वर्गदूत और शैतान के स्वर्गदूत। परमेश्वर के स्वर्गदूतों को "चुने हुए स्वर्गदूत" कहा जाता है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें चुना था कि वे पाप में न गिरें (1 तीमुथियुस 5:21)। वे पवित्र स्वर्गदूत हैं (मरकुस 8:38) और प्रकाश के स्वर्गदूत (2 कुरिन्थियों 11:14)। वे "सेवकाई की आत्माएँ हैं जो उन लोगों की सेवा करने के लिए भेजी जाती हैं जो उद्धार पा लेंगे" (इब्रानियों 1:14)।

शैतान के स्वर्गदूत वे स्वर्गदूत हैं जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है या परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है (प्रकाशितवाक्य 12:7-9; 2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6)। दुष्ट स्वर्गदूत शैतान की सेना बनाते हैं (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 1: 4,9)। वे झूठे हैं (यूहन्ना 8:44) और निरंतर पाप करते हैं (सीएफ। 1 यूहन्ना 3:8-10)। शैतान के कुछ स्वर्गदूत क्षेत्रीय आत्माओं के रूप में प्रकट होते हैं, जो पूरे देश पर प्रभाव डालते हैं (दानिय्येल 10:12-14,20)।

6. स्वर्गदूतों का क्रम।

जब मसीह ने स्वर्गदूतों की रचना की, तो उन्होंने उन्हें दृश्य और अदृश्य सिंहासन, शक्तियाँ, शासक, अधिकारी और प्रभुत्व के रूप में बनाया। ये शब्द स्वर्गदूतों के विभिन्न क्रमों का वर्णन करते हैं (कुलुस्सियों 1:16)। स्वर्गदूतों के ये सभी क्रम अब पुनरुत्थानित और ऊँचा किए हुए मसीह के अधीन हैं और यीशु मसीह से अलग होकर इनके पास कोई शक्ति नहीं है (इफिसियों 1:21; 1 पतरस 3:22)। बाइबल स्वर्गदूतों के इन क्रमों में से कुछ का वर्णन करती है।

(1) करूब।

करूब वे स्वर्गदूत हैं, जो परमेश्वर की शक्ति, ऐश्वर्य और महिमा को प्रकट करते हैं और जो परमेश्वर की पवित्रता की रक्षा करते हैं स्वर्ग में (भजन संहिता 99:1; यहेजकेल 10:1-22), उसके पृथ्वी पर उतरने में

(भजन संहिता 18:10), अदन की वाटिका में (उत्पत्ति 3:24), मिलाप के तम्बू में (निर्गमन 25:18-22) और मंदिर में (1 राजा 6:27-29)।

(2) साराप।

साराप परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर के स्वर्गदूत हैं, जो उसके चरित्र की बढ़ाई करते हैं और लोगों को परमेश्वर के पास विस्मय के साथ पहुँचने के लिए प्रेरित करते हैं (यशायाह 6:1-8)।

(3) प्रधान स्वर्गदूत।

प्रधान स्वर्गदूत अति महत्वपूर्ण स्वर्गदूत हैं, जो शैतान और उसके स्वर्गदूतों के विरुद्ध लड़ते हैं, जैसे मीकाएल (दानिय्येल 10:11; प्रकाशितवाक्य 12:7-9)।

(4) व्यक्तिगत स्वर्गदूत।

कभी-कभी स्वर्गदूत परमेश्वर से एक विशेष संदेश लाया दानिय्येल के पास (दानिय्येल 9:20-23), युसूफ के पास (मत्ती 1:20-23), जकर्याह के पास (लुका 1:11-20) और मरियम के पास (लुका 1:26-38)।

कोई भी स्वर्गदूत परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना नहीं जानता है। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता स्वर्गदूतों से अधिक जानते थे। हालाँकि भविष्यवक्ता यीशु मसीह के विषय में कुछ जानते थे, परन्तु पूर्ण और पूरा प्रकाशन केवल यीशु मसीह और उसके प्रेरितों के माध्यम से आया था (इब्रानियों 1:1-2; 1 पतरस 1:10-12)!

(5) पतित स्वर्गदूत।

देखें नियमावली 8, अनुपूरक 13। शैतान मूल रूप से एक अभिभावक करूब था (यहेजकेल 28:15-17)। जब शैतान पतित हुआ , तो उसने कई अन्य स्वर्गदूतों को अपने साथ पाप में लपेट लिया (प्रकाशितवाक्य 12:4)। तब से इन पतित स्वर्गदूतों को "शैतान के स्वर्गदूत" कहा जाता है (प्रकाशितवाक्य 12:9), या शैतान या दुष्ट आत्माएँ (मत्ती 12:22-28,43-45)।

कुछ पतित स्वर्गदूत बाइबल के परमेश्वर की ओर से आने वाले सुसमाचार की बजाए "एक अलग सुसमाचार" का प्रचार करते हैं और इसलिए वे और उनके संदेश को मानने वाले लोग "शापित" हैं (यूनानी: अनाथेमा) (गलतियों 1:8; 1 तीमुथियुस 4:1! झूठे धर्म इन पतित स्वर्गदूतों को अपने "देवताओं" के रूप में संदर्भित करते हैं (1 कुरिन्थियों 8:4-5) और उन्हें अपने "देवताओं" के रूप में पूजते हैं (1कुरिंथियों 10:20)। झूठा भविष्यवक्ता बिलाम ऐसे "देवताओं" (इब्रानी: एलोहिम) से परामर्श लेता है (गिनती 22:38) और इस्राएल के ईश्वरत्व को विशेष रूप से शक्तिशाली मानता है जिसे सांत्वना देना आवश्यक है इससे पहले कि अभिशापों की धारा इस्राएल के विरुद्ध भेजी जा सके (गिनती 23:3-4)

7. स्वर्गदूतों की सेवा।

स्वर्गदूतों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य परमेश्वर की बढ़ाई करना करना है। उन्हें परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर खड़े हुए और दिन-रात उसकी स्तुति गाने के रूप में दर्शाया गया है (दानिय्येल 7:9-10; प्रकाशितवाक्य 5:11-14)। उनका दूसरा काम परमेश्वर के वचन का पालन करना है और वह करना जो कुछ भी वह उन्हें करने के लिए आज्ञा देता है (भजन संहिता 103:20-21; मत्ती 6:10)।

(1) स्वर्गदूतों की साधारण सेवा।

स्वर्गदूत परमेश्वर द्वारा दुनिया की संभावित देखभाल करने के लिए परमेश्वर के उपकरण हैं। "एक (रक्त या मनुष्य) से परमेश्वर ने मनुष्यों के प्रत्येक राष्ट्र को बनाया था, कि वे पूरी पृथ्वी पर निवास करें; और उसने उनके लिए समयों और उन सटीक स्थानों का निर्धारण किया, जहाँ उन्हें रहना था" (प्रेरितों के काम 24;26)। इब्रानी में व्यवस्थाविवरण 32:8 कहता है, "जब सबसे महान ने राष्ट्रों को उनकी विरासत दी, जब उसने (पूरी पृथ्वी को) सारी मानव जाति के बीच विभाजित किया, तो उसने स्वर्गदूतों की संख्या के अनुसार लोगों के लिए सीमाएँ निर्धारित की (एनआईवी: इस्राएल के पुत्रों की संख्या)।" विभिन्न राष्ट्रों के शासन को स्वर्गदूतों की बराबर संख्या के बीच विभाजित किया गया था।

शैतान और उसके स्वर्गदूतों के पाप में गिरने के पश्चात, देशों के इन दुष्ट स्वर्गदूत सदृश राज्यपालों को शत्रुतापूर्ण प्रधानताओं और शक्तियों के रूप में चित्रित किया गया है (दानिय्येल 10:12-14,20; सीएफ। दानिय्येल 10:21; 12:1)। प्रेरित पौलुस उन्हें "स्वर्गीय लोकों में इस अन्धकारमय संसार की दुष्टता की आध्यात्मिक सेनाओं की शक्तियाँ कहता है" (इफिसियों 6:12)। मसीह के प्रथम आगमन से पहले स्वर्गदूत स्वयं को परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करते हैं जब उन्हें अपनी सेवा का लेखा देने के लिए कहा जाता है (अय्यूब 1:6)।

"आने वाला संसार" जिसका उद्घाटन मसीह के पहले आगमन के साथ हुआ था (सीएफ। इब्रानियों 9:10), अब स्वर्गदूतों के अधीन नहीं था, परन्तु यीशु मसीह के (इब्रानियों 2:5-9)।

(2) स्वर्गदूतों की असाधारण सेवा।

स्वर्गदूत परमेश्वर के उद्धार को उसके लोगों तक ले जाने के लिए परमेश्वर के साधन हैं। उन्हें विश्वासियों की सेवा करने के लिए भेजा जाता है, अर्थात, जो यीशु मसीह में उद्धार प्राप्त करेंगे (इब्रानियों 1:14)। वे देखते हैं कि विश्वासियों के साथ क्या हो रहा है, विश्वासियों से बात करते हैं, विश्वासियों की रक्षा करते हैं, विश्वासियों को बचाते हैं, विश्वासियों की देखभाल करते हैं, विश्वासियों का मार्गदर्शन करते हैं, विश्वासियों को मजबूत करते हैं, विश्वासियों की ओर से लड़ते हैं और मृत्यु के पश्चात विश्वासियों को उठाकर परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाते हैं (लुका 16:22)। वे कलीसिया में उपस्थित होते हैं और कलीसिया से परमेश्वर की योजना के ज्ञान के विषय में सीखते हैं (1 कुरिन्थियों 11:10)। वे कुछ लोगों

के लिए परमेश्वर के विशेष संदेशों की मध्यस्थता करते हैं, परमेश्वर के लोगों के लिए आशीषों का संचार करते हैं और परमेश्वर के शत्रुओं पर न्यायों को संचालित करते हैं।

उद्धार के इतिहास के महान मोड़ों में स्वर्गदूतों की गतिविधि सबसे प्रमुख थी।

स्वर्गदूत प्रमुख थे:

- कुलपिता के दिनों में (अब्राहम) (उत्पत्ति 19:1)
- व्यवस्था-देने के दिनों में (मूसा) (निर्गमन 3:2)
- इस्राएल के निर्वासन और बहाली की अवधि के दौरान (यहेजकेल 1)
- यीशु मसीह के जन्म के समय (मरियम) (लुका 1)
- उसके पुनरुत्थान पर (मत्ती 28:1-7)
- उसके ऊपर उठाए जाने पर (प्रेरितों के काम 1:9-11)
- प्रेरितों की सेवकाई के दौरान (प्रेरितों के काम 5:19)
- मसीह के दूसरे आगमन पर (मत्ती 2:30-31)

अजनबियों के लिए आतिथ्यकारी होने से, कुछ मसीहियों ने स्वर्गदूतों का मनोरंजन किया है (इब्रानियों 13:1)। अन्य विश्व-धर्मों के गैर-मसीहियों के कई वृत्तान्त हैं जिनमें एक सपने में या एक दर्शन में स्वर्गदूत उनसे मिलने आए हैं और उसके पश्चात यीशु मसीह को उनके उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में बदल दिया गया है।

ख. स्वर्गदूत और यीशु मसीह

1. यहोवा का स्वर्गदूत कौन है?

बाइबल के कुछ वचनों में, "यहोवा के स्वर्गदूत" (इब्रानी: मालक याहवे) को स्वयं यहोवा (याहवे) के साथ सीधे पहचाना जाता है, जबकि अन्य वचनों में वह यहोवा की ओर से प्रतिष्ठित होता है।

(1) यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा का प्रकाशन है।

निर्गमन 3:2-15 में, यहोवा के दूत ने एक झाड़ी के भीतर से आग की लपटों में मूसा को दर्शन दिए। तब उसने स्वयं की "अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर" के रूप में पहचान दी और अपना नाम "मैं जो हूँ सो हूँ" बताया। इस नाम का अर्थ यह है:

- कि परमेश्वर के अस्तित्व का वर्णन करना या उसे किसी भी नाम से व्यक्त करना असंभव है
- कि परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति अटल और विश्वासयोग्य है।

यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा का दृश्य प्रकाशन है। यूहन्ना 1:18 और 17:6 पढ़ें। यहोवा के उस स्वर्गदूत जिसने पुराने नियम में लोगों के सामने परमेश्वर को प्रकट किया था की तुलना यीशु मसीह के साथ करें जिसने नए नियम में लोगों के सामने परमेश्वर को प्रकट किया था।

(2) यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा की उपस्थिति है।

निर्गमन 23:20-23 में, यहोवा ने मूसा और इस्राएल से स्वर्गदूत भेजने का वादा किया था जो उसके नाम को उनके आगे लेकर जाएगा, रास्ते में उनकी रक्षा करने के लिए और उन्हें उस जगह पर ले जाने के लिए जो उसने उनके लिए तैयार की थी। पद 22 में, यहोवा का स्वर्गदूत और स्वयं यहोवा विनिमेय व्यक्तित्व हैं, क्योंकि यह कहता है, "ध्यान से सुनो कि स्वर्गदूत क्या कहता है और जो मैं कहता हूँ वह सब करो।", इसके अलावा, यहोवा का स्वर्गदूत पापों को क्षमा कर सकता है (पड़ 21) कुछ जो केवल यहोवा ही कर सकता है (मीका 7:18-19)। यहोवा का नाम उस में है, अर्थात, यहोवा, जो इस स्वर्गदूत में स्वयं को प्रकट करता है, वास्तव में उपस्थित है।

निर्गमन 33:2,14 में, यहोवा ने वादा किया था कि उसका स्वर्गदूत उनके आगे जाएगा और उन्हें समझाया कि इस प्रकार से "यहोवा की उपस्थिति" उनके साथ जा रही है। यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत अपने लोगों के साथ यहोवा की उपस्थिति है। मत्ती 1:23 और मरकुस 2:5-7 पढ़ें। यहोवा के स्वर्गदूत की यीशु मसीह के साथ तुलना करें, जिसे "इम्मैनुएल" (परमेश्वर हमारे साथ) कहा जाता है और जो पापों को क्षमा करता है जैसा कि परमेश्वर करता है (मरकुस 2:7,10)।

(3) यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा की ओर से रक्षक और मुक्तिदाता है।

भजन संहिता 34:7 और 35:4-7 में, यहोवा का स्वर्गदूत उन लोगों के चारों ओर छावनी डालता है जो यहोवा का भय रखते हैं और वह उनके उत्पीड़कों को दूर भगाता है। यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत रक्षक और मुक्तिदाता के रूप में यहोवा है। यूहन्ना 10:9-10 पढ़ें। यहोवा के स्वर्गदूत की यीशु मसीह के साथ तुलना करें, जो अपनी भेड़ों को बचाता है और उनकी रक्षा करता है।

(4) यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा की ओर से न्यायी है।

1 इतिहास 21:15-19,27 में, राजा दाऊद के पाप के न्याय के रूप में यरूशलेम के एक हिस्से को नष्ट करने के लिए यहोवा ने स्वर्गदूत को भेजा। यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत न्यायाधीश के रूप में यहोवा है। प्रकाशितवाक्य 19:11-16 पढ़ें। स्वर्गदूत की तुलना यीशु मसीह के साथ यहोवा से करें, जो पश्चाताप के बिना राष्ट्रों का न्याय करेगा।

(5) यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा और उसके सेवकों के बीच बिचवई है।

जकर्याह 1:8-11 में, यहोवा ने सर्वेक्षण करने के लिए पृथ्वी पर घोड़ों पर सवारों का एक समूह भेजा। जब वे लौटे, तो उन्होंने यहोवा के स्वर्गदूत को सूचना दी। यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा और उसके सेवकों के बीच मध्यस्थ है। 1 तीमुथियुस 2:5 पढ़ें। यीशु मसीह के साथ यहोवा के स्वर्गदूत की तुलना करें, जो परमेश्वर और पुरुषों के बीच बिचवई है।

(6) परमेश्वर का स्वर्गदूत दूसरों के लिए परमेश्वर के साथ मध्यस्थ है।

जकर्याह 1:12-13 में, यहोवा के स्वर्गदूत ने यरूशलेम और यहूदा के शहरों के लिए दया की विनती करते हुए, सर्वशक्तिमान यहोवा को संबोधित किया। यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत यहोवा के साथ दूसरों के लिए मध्यस्थ है। इब्रानियों 7:25 पढ़ें। यीशु मसीह के साथ यहोवा के स्वर्गदूत की तुलना करें, जो हमेशा अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करने के लिए रहता है।

(7) यहोवा का स्वर्गदूत अधिवक्ता है, जो दूसरे के बचाव में यहोवा से बात करता है।

जकर्याह 3:1-7 में, महायाजक यहोशू यहोवा के स्वर्गदूत के सामने खड़ा होता है, जबकि उस पर शैतान द्वारा आरोप लगा होता है। यहोवा का स्वर्गदूत, जिसे पद 2 में "यहोवा" कहा जाता है, ने उसका बचाव किया और उसके पापों को दूर कर दिया। यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत अधिवक्ता है, जो किसी अन्य व्यक्ति के बचाव में यहोवा से बात करता है। 1 यूहन्ना 2:1-2 पढ़ें। यीशु मसीह के साथ यहोवा के स्वर्गदूत की तुलना करें, जो मसीहियों की रक्षा में पिता से बात करता है।

(8) यहोवा का स्वर्गदूत वाचा का बिचवई है।

मलाकी 3:1-5 में, यहोवा के स्वर्गदूत को राजा और न्यायाधीश होते हुए उसकी महिमा के संकेत के रूप में "प्रभु" (इब्रानी: अदोन) कहा जाता है और उसे "वाचा का स्वर्गदूत या संदेशवाहक" कहा जाता है: (इब्रानी: मलक हा-बेरित) (क्योंकि वह वाचा का बिचवई है) (सीएफ। इब्रानियों 8:6)। "वह परमेश्वर के मंदिर में चमकानेवाला की आग या धोबी के साबुन के समान आएगा।" यहाँ यहोवा का स्वर्गदूत पुराने और नए दोनों नियमों में वाचा का बिचवई है। पद 5 में उसकी पहचान स्वयं यहोवा के साथ की गई है, जो परिष्कृत और शुद्ध करने के साथ-साथ न्याय करने के लिए भी आता है। यहोवा के स्वर्गदूत की तुलना यीशु मसीह के साथ करें, जो परमेश्वर और पुरुषों के बीच बिचवई, जिसने अपने पहले आगमन पर यहूदियों और अन्यजातियों को शुद्ध किया (मत्ती 3:10-12) और जो अपने दूसरे आगमन पर सभी का न्याय करेगा (यूहन्ना 5:22)।

(9) निष्कर्ष।

यह स्पष्ट है कि यहोवा का स्वर्गदूत एक बनाया हुआ स्वर्गदूत नहीं है। यहोवा का स्वर्गदूत पुराने नियम में स्वयं परमेश्वर (इब्रानी: याहवे) का प्रकट प्रकाशन (उपस्थिति) है। नए नियम में मानव शरीर धारण करने से पहले उसे प्रभु यीशु मसीह के साथ पहचाना जाना है। यीशु मसीह नए नियम में अदृश्य परमेश्वर का दृश्य प्रकाशन है (कुलुस्सियों 1:15)। अंतर यह है: पुराने नियम में परमेश्वर मनुष्य की प्रकृति के बिना *एक व्यक्ति के रूप में प्रकट हुए* (उत्पत्ति 18:1-2)। नए नियम में परमेश्वर ने यीशु मसीह में *एक व्यक्ति के स्वभाव को लिया* (यूहन्ना 1:1,14)। यीशु मसीह के पहले आगमन के पश्चात, यहोवा का स्वर्गदूत फिर से प्रकट नहीं होता है।

पुराने नियम में यहोवा के स्वर्गदूत और नए नियम में यीशु मसीह को यहोवा द्वारा भेजा गया था और उनकी समान सेवकाई थी, अर्थात, प्रकट करना, बिचवई होना, मध्यस्थता करना, नेतृत्व करना, रक्षा करना, बचाना और न्याय करना। यहोवा का स्वर्गदूत परम पिता और परमेश्वर के आत्मा से अलग है, क्योंकि वे कभी भी मानव स्वभाव को नहीं लेते हैं जैसा कि वह करता है (उत्पत्ति 16:7-14; 22:11-18; 31:11-13)।

2. यीशु मसीह के साथ तुलना में स्वर्गदूत।

इब्रानियों अध्याय 1-2 में, यीशु मसीह की तुलना स्वर्गदूतों से की गई है। इब्रानियों 1:1-14 में, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के विषय में सात तथ्य बताए गए हैं, जो उसकी महानता को सामने लाते हैं और बताते हैं कि क्यों उसे दिया गया प्रकाशन सबसे ऊँचा प्रकाशन है जो परमेश्वर दे सकता है। यीशु मसीह को अपने नए नियम के ढंग में होते हुए उसके पुराने नियम के ढंग के विपरीत करने के लिए तुलनात्मक विशेषण "बेहतर" का उपयोग इब्रानियों की पुस्तक में 13 बार किया गया है।

(1) यीशु मसीह का संदेश लोगों के लिए परमेश्वर का अंतिम शब्द है (इब्रानियों 1:1-3)! यीशु मसीह स्पष्ट रूप से अंतिम और समापक भविष्यवक्ता है जिसका यहोवा परमेश्वर ने पुराने नियम में वादा किया था! यह वही है जिसके माध्यम से परमेश्वर पृथ्वी पर प्रत्येक देश को आशीष देंगे (गलातियों 3:14,16)। किसी भी धार्मिक पृष्ठभूमि से व्यक्ति जो यीशु मसीह को नहीं सुनता है उसे परमेश्वर के लोगों से दूर कर दिया जाएगा (व्यवस्थाविवरण 18:18-19; प्रेरितों के काम 3:21-26)!

क्योंकि परमेश्वर के पास यीशु मसीह से बड़ा कोई सन्देशवाहक नहीं है (मत्ती 22:33-44; लूका 2:34 देखें) परमेश्वर के पास अब सुसमाचार और नए नियम के संदेश से आगे (अतिरिक्त या बाद में) कोई संदेश नहीं है![1] परमेश्वर ने अपना अंतिम शब्द यीशु मसीह में और के माध्यम से बोल दिया है (पद 1)!

इब्रानियों 1:1-3 में यीशु मसीह के संबंध में सात तथ्यों को बताया गया है जो उसकी महानता पर प्रकाश डालते हैं और दिखाते हैं कि उसे दिया गया प्रकाशन सबसे ऊँचा प्रकाशन है जो परमेश्वर दे सकता है!

- पहला तथ्य। यीशु मसीह सभी चीजों का वारिस है (पद 2)। "मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूंगा" (भजन संहिता 2:8)। वह बनाए गए ब्रह्मांड का वारिस है (इब्रानियों 1:10-12) और ''आने वाली दुनिया'' का भी (इब्रानियों 2:5)।

---

[1] इस्लाम का मोहम्मद और मॉर्मनवाद का जोसेफ स्मिथ इसलिए भविष्यद्वक्ता नहीं हैं जो बाइबल के परमेश्वर से लोगों के लिए अनुपूरक संदेश लाते हैं! मोहम्मद "भविष्यवक्ताओं की मुहर" नहीं है, क्योंकि उससे बहुत पहले, यीशु मसीह ने परमेश्वर के अंतिम शब्द बोले थे (प्रेरितों के काम 3:22-24; इब्रानियों 1:1-2)!

- दूसरा तथ्य। यीशु मसीह दुनिया का सृष्टिकर्ता है (यूनानी: आईओनेस) (पद 2)। बहुवचन निर्मित चीजों (पदार्थ, ऊर्जा, स्थान और समय) को इंगित करता है (नीतिवचन 1:22-23; यूहन्ना 1:3; कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 11:3)।
- तीसरा तथ्य। यीशु मसीह परमेश्वर के अदृश्य गुणों (पद 3) की दृश्यमान तेजस्विता (यूनानी: अपौगस्मा) है। तेजस्व प्रकाश उसी पदार्थ का है (यूनानी: होमो-उसियोस) जिसका स्रोत का प्रकाश है ("प्रकाश से प्रकाश")।
- चौथा तथ्य। यीशु मसीह परमेश्वर के अदृश्य अलौकिक व्यक्तित्व (यूनानी: हूपोस्टैसिस) की दृश्यमान छाप (सटीक निरूपण) (यूनानी: कैरक्टर) या छवि (यूनानी: ईकोन) है। परमेश्वर जो सार में है, वह मसीह में प्रकट होता है। यह देखना कि मसीह कौन है, यह देखना है कि पिता परमेश्वर कैसा है?
- पाँचवाँ तथ्य। यीशु मसीह अपने सामर्थी (रचनात्मक) शब्द (यूनानी: रेमाती तएस ढुनामिओस) (इब्रानियों 1:3) के द्वारा सभी चीजों को बनाकर रखता है। "उसमें सभी चीजें एक दूसरे को पकड़ी रहती हैं" (यूनानी: सन-हिस्टेमी) (पूर्ण काल)" (कुलुस्सियों 1:17)। वह न केवल अपने अस्तित्व को जारी रखता है (जैसा कि एटलस दुनिया को पकडे हुए है), परन्तु उनके नियत मार्ग पर सभी चीजों को आगे बढ़ाता है।
- छठा तथ्य। यीशु मसीह ने *एक बार हमेशा के लिए* पापों का शुद्धिकरण प्रदान किया था (यूनानी: पोइओ) (अनिर्दिष्टकालीन काल)। [2]

  पापों का प्रायश्चित न कोई और कर सकता या किया है!
- सातवाँ तथ्य। यीशु मसीह स्वर्ग में महामहिम के दाहिने हाथ ए*क बार हमेशा के लिए* बैठ गया है (यूनानी: कातिजो) (अनिर्दिष्टकालीन समय)।

स्वर्गदूतों के ऊपर यीशु मसीह की श्रेष्ठता पर यह जोर यहूदी मसीहियों को सभी प्रकार की भ्रामक शिक्षाओं से भटकने से रोकने के लिए दिया गया है (इब्रानियों 13:9)। साथ ही कुलुस्सियों को लिखे पत्र से पता चलता है कि एक गलत शिक्षा उपस्थित थी जिसमें स्वर्गदूतों की पूजा की जाती थी (कुलुस्सियों 2:18)।

(2) स्वर्गदूतों की तुलना में यीशु मसीह की पदवी और शीर्षक अधिक उत्कृष्ट है (इब्रानियों 1:4-14)।

इब्रानियों 1 और 2 में विभिन्न पुराने नियम के उद्धरण यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का अंतिम संदेश (नया नियम), जो यीशु मसीह द्वारा संचारित किया गया था, व्यवस्था (पुराने नियम) का ध्यान रखनेवालों की तुलना में अधिक राजसी प्रतिबंधों द्वारा सुरक्षित है, जो स्वर्गदूतों द्वारा संचारित किया गया था (इब्रानियों 2:2)।

- पहला उद्धरण। भजन संहिता 2:7 (इब्रानियों 1:5)।

"तू मेरा पुत्र; आज मैं तेरा पिता (यूनानी: जननाओ) बन गया हूँ (पूर्ण काल)।" ये शब्द कभी स्वर्गदूतों को नहीं बोले गए! स्वर्गदूतों को सामूहिक रूप से "परमेश्वर के पुत्र" कहा जा सकता है, परन्तु "परमेश्वर का पुत्र" कभी नहीं! ये शब्द मध्य पूर्व में सिंहासनारूढ़ के लिए उपासना से आते हैं, परन्तु यहाँ दाऊद के सिंहासनारूढ़ पर, परन्तु पहली बार मसीहा-राजा में पूरे हुए (मरकुस 1:11; लूका 1:32; प्रेरितों के काम 13:33)। "आज" मसीह के महिमागान को संदर्भित करता है: उसका पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और सिंहासनारूढ़ (भजन संहिता 110:1)। पूर्ण अनंत काल से वह "परमेश्वर का पुत्र" है, परन्तु अपने उद्धार के काम के पूरा होने के पश्चात अपने अधिकार और विशेषाधिकार का उपयोग करना आरम्भ करता है।

- दूसरा उद्धरण। 2 शमूएल 7:14 (इब्रानियों 1:5)।

"मैं उसका पिता होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।" 1 इतिहास 17:11-14 यह साबित करता है कि यह सुलैमान के लिए नहीं, बल्कि मसीहा के लिए संदर्भित है। इसके अलावा रोमियों 1:3-4 का कहना है कि यीशु मसीह "अनंत काल से परमेश्वर का पुत्र" है, परन्तु मानव इतिहास में एक निर्बल मानव स्वभाव के साथ पैदा हुआ था, प्रनत एक महिमामय मानव स्वभाव के साथ फिर से जीवित हो गया।

- तीसरा उद्धरण। व्यवस्थाविवरण 32:43 (इब्रानियों 1:6)।

(एक लंबा यूनानी लेख), "हे आकाश, उसके साथ मिलकर आनन्दित हो, और परमेश्वर के पुत्र उसकी आराधना करें; हे राष्ट्रो, उसके लोगों के साथ, आनन्दित हो, और परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसको शक्ति प्रदान करें।" भजन संहिता 97:7।

"परमेश्वर के सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें।" "फिर से" (यूनानी: पालिन) दूसरे आगमन को संदर्भित नहीं करता है, परन्तु स्वर्गदूतों के साथ दूसरे वैषम्य को। "पहलौठा" इस तथ्य को संदर्भित करता है कि वह सृष्टि से पहले ही अस्तित्व में था और सारी सृष्टि उसकी विरासत है। स्वर्गदूतों को उसकी (परमेश्वर पिता की बजाए) आराधना करने के लिए बोला गया है। जब उसे बसे हुए संसार में लाया जाता है (यूनानी: ओइकुमिनी) (स्वर्गदूतों सहित), तब को संदर्भित करता है जब उसे महिमा दी गई थी (सीएफ। यूहन्ना 5:23)। फिर उसे आने वाले संसार (नई विश्व व्यवस्था) के राजा के रूप में पेश किया गया।

---

[2] लातिन भाषा में एक पूर्ण कृदंत की अनुपस्थिति के कारण, लातिनी वूलगेट बाइबल में वर्तमान कृदंत का उपयोग यूनानी अनिर्दिष्टकालीन कृदंत के बराबर के रूप में हुआ है ("कथारिसमोनटॉन हमार्टियोन पोइसामिनोस" बन गया "पुर्गातीओनेम पेकैटोरम फेसियेंस") (इब्रानियों 1:3)। इससे यह धारणा बनी कि स्वर्ग में मसीह ने वर्तमान समय में पापों का प्रायश्चित करना जारी रखा हुआ है। यही कारण है कि रोमन कैथोलिक चर्च में प्रतिदिन सामूहिक सभा मनाई जाती है! परन्तु अनिर्दिष्टकालीन काल सिखाता है कि इतिहास में यीशु के पहले आगमन पर एक बार उसकी मृत्यु पर पापों का प्रायश्चित किया गया है! रोमन कैथोलिक चर्च में सामूहिक सभा यीशु मसीह के पहले आगमन पर उसके पूरे किए हुए उद्धार के काम में न कुछ भी जोड़ सकती है और न ही जोड़ती है!

- चौथा उद्धरण। भजन संहिता 104:4 (इब्रानियों 1:7)।

"वह अपने स्वर्गदूतों को आँधियाँ बनाता है, अपने सेवकों को आग की लपटें।" इब्रानी लेख कहता है, "जो आँधियों को अपने स्वर्गदूत बनाता है; आग की लपटों को अपने सेवक।" इस प्रकार, प्रकृति की शक्तियाँ परमेश्वर की इच्छा को पूरा करती हैं। परन्तु यहाँ परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए स्वर्गदूतों को आँधियों की तुलना में तेज और आग की तुलना में भयंकर होने के रूप में चित्रित किया गया है।

- पाँचवाँ उद्धरण। भजन संहिता 45:7-8 (इब्रानियों 1:8-9)।

"हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा; तेरा राजदण्ड न्याय का है। तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है।" भजन 45 एक शाही विवाह का जश्न मनाता है। पहला भाग राजा और दूसरा रानी को संबोधित है। उद्धरण पहले भाग से है। राजा (दाऊद के शाही घर से) को पूर्व में ठेठ अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा की विशेषता में संबोधित किया गया है। वह इस्राएल के परमेश्वर का राजप्रतिनिधि है जिसके माध्यम से परमेश्वर उसकी योजना को पूरा करता है। परन्तु भविष्यवाणियों के ये शब्द मसीहा राजा में पूरे हुए हैं। उसे "परमेश्वर का पुत्र" और "परमेश्वर" के रूप में संबोधित किया जाता है क्योंकि वह परमेश्वर की महिमा की चमक है और उसके व्यक्तित्व का सटीक निरूपण है! स्वर्गदूतों सहित सभी निर्मित चीजें समय और चीजों की क्षणिकता के अधीन हैं, परन्तु यीशु मसीह और उसका राजपद हमेशा के लिए बने रहते हैं! उसके राज्य का कोई अंत नहीं है! और केवल उसके राज्य में पूरी धार्मिकता की विशेषता है (भजन संहिता 89:15; यशायाह 11:5)! "अभिषेक" जो उसके बपतिस्मे के समय पवित्र आत्मा को प्राप्त करने हेतु बहुत कुछ संदर्भित नहीं करता है (मरकुस 1:10; प्रेरितों के काम 10:38), जितना कि अपने कार्य के पूरा होने पर "आनंद जो उसके सामने रखा गया है" (यशायाह 61:1-5; इब्रानियों 12:2)। उसके "साथी" (सहयोगी) (यूनानी: मेटोचोई) आसपास के देशों के राजा या स्वर्गदूत नहीं हैं, बल्कि मसीही "कई बच्चे" या "भाई" हैं (इब्रानियों 2:10-11; 3:14)।

- छठा उद्धरण। भजन संहिता 102:25-27 (इब्रानियों 1:10-12)।

पद 6 में ष्परमेश्वर कहते हैंष पद 10 पर भी लागू होता है। और: आरम्भ में, हे परमेश्वर, तुने पृथ्वी की नींव रखी, और आकाश तेरे हाथों का काम है। वे नष्ट हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा; वे सभी एक वस्त्र के समान घीस जाएँगे। तू उन्हें एक बागे के समान इकठ्ठा करेगा; एक कपड़े के समान, वे बदल दिए जाएंगे। परन्तु तू वैसा ही बना रहता है, और तेरे वर्ष कभी समाप्त नहीं होंगे।" यहाँ तक कि बनाए गए ब्रह्मांड की विशाल लंबी अवधि अंतत: समाप्त हो जाती है, परन्तु यीशु मसीह, जिसे यहाँ ष्परमेश्वरष (यूनानी: कुरीए) के रूप में संबोधित किया गया है, हमेशा के लिए रहता है! नए नियम के लेखक पुराने नियम में जो परमेश्वर के विषय में कहा गया है, उसे नए नियम में यीशु मसीह के लिए लागू करते हैं (उदाहरण के लिए: फिलिप्पियों 2:10-11 में यशायाह 45:23 और 1 पतरस 3:15 में यशायाह 8:13)।

- सातवाँ उद्धरण। भजन संहिता 110:1 (इब्रानियों 1:13-14)।

"मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।" पुराने नियम में यह सुलैमान के

सिंहासनारूढ़ को संदर्भित था, परन्तु यहाँ यीशु मसीह के सिंहासनारूढ़ को है। परमेश्वर उसे उसके सभी शत्रुओं पर विजय का वादा करता है। भविष्यवक्ता दानिय्येल (7:13) और स्वयं यीशु (मरकुस 14:62) इसको संदर्भित करते हैं। सर्वोच्च ऊँचा स्वर्गदूत जिब्राएल "परमेश्वर के सामने खड़ा हो सकता है" (लूका 1:19), परन्तु केवल यीशु मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ (सम्मान की अनूठी जगह) पर "बैठ सकता है"! स्वर्गदूत आदेश को तेजी से पूरा करने के लिए खड़े रहते हैं। परन्तु स्वर्गदूत हैं, "मसीहियों की सेवा करने के लिए भेजी गई सेवा करने वाली आत्माएँ" (पद 14)[3]।

(3) स्वर्गदूतों ने व्यवस्था की मध्यस्थता की है, परन्तु यीशु मसीह ने सुसमाचार की मध्यस्थता की है।

इब्रानियों 2:1-4 में हम पढ़ते हैं कि स्वर्गदूतों के ऊपर यीशु मसीह की श्रेष्ठता इस तथ्य पर आधारित है कि स्वर्गदूतों ने भविष्यवक्ताओं को पुराने नियम की अनुष्ठानिक व्यवस्था का संचार किया (व्यवस्थाविवरण 33:2; प्रेरितों के काम 7:53; गलतियों 3:19), परन्तु यीशु मसीह ने सुसमाचार का संचार किया (यूहन्ना 1:17)।

पुराने नियम में पुराने नियम व्यवस्था के उल्लंघन के लिए दण्डों का वर्णन किया गया है। नए नियम में यीशु मसीह के ऐसे महान उद्धार को अनदेखा करने पर मसीही फिर कैसे बचेंगे? परमेश्वर ने इस सेवकाई की उन चिन्हों, चमत्कारों और आध्यात्मिक वरदानों से पुष्टि की जो यीशु मसीह की सेवकाई के साथ थे (प्रेरितों के काम 2:22) और उसके पश्चात प्रेरितों सेवकाई के साथ (प्रेरितों के काम 2:43)।

(4) स्वर्गदूत ने पुरानी विश्व-व्यवस्था का प्रशासन चलाया, जबकि यीशु मसीह नए विश्व-व्यवस्था का संचालन करता है।

इब्रानियों 2:5 में हम पढ़ते हैं कि, जब स्वर्गदूत यीशु मसीह के देह धारण से पहले ब्रह्मांड के प्रशासन को चला रहे थे, यीशु मसीह ने अपनी उमंग और सिंहासनारूढ़ के समय से नई विश्व-व्यवस्था पर अपने शासनकाल का उद्घाटन किया था और वह इसे अपने दूसरे आगमन पर पूरा करेंगे (प्रेरितों 3:21; 1 कुरिन्थियों 15:28)। *वास्तविकताओं* की यह नई विश्व-व्यवस्था *छायावाद* के पुराने विश्व-व्यवस्था से कहीं अधिक पार होती है (इब्रानियों 8:5-8,13; 10:1)। "परमेश्वर ने ऐसा कुछ भी नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो" (इब्रानियों 2:8)।

"पर हम अब तक सब कुछ उसके आधीन नहीं देखते। पर हम यीशु को, जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं"(इब्रानियों 2:8-9)। हम मनुष्य को सृष्टि

के स्वामी और प्रभु के रूप उसको परमेश्वर प्रदत्त प्राधिकरण और अधिकार का प्रयोग करते हुए नहीं देख सकते हैं। हम अभी तक देखते हैं कि सभी चीजें मनुष्य के अधीन कर दी गई हैं (भजन संहिता 8)। परन्तु हम देखते हैं (विश्वास की आँखों से) कि परमेश्वर के व्यक्ति (यीशु मसीह) को संप्रभु शक्ति पहनाई गई है। यीशु मसीह मनुष्य से किए गए इस वादे को उसके स्थान पर पूरा कर रहा है! मसीह के राज्य के भीतर आतंकवादी कलीसिया बढ़ रही है! परन्तु क्योंकि कई अविश्वासियों और अन्य गैर-मसीहियों और शैतानों ने अभी तक यीशु मसीह को समर्पण नहीं किया है, यीशु मसीह भी ष्उसके शत्रुओं को उसके पाँव की चौकी बनाए जाने की प्रतीक्षा करता हैष (इब्रानियों 10:13)। इसका अर्थ यह है कि यद्यपि यीशु मसीह प्रत्येक चीज और सबका सही शासक है, प्रत्येक चीज और सब अभी भी उसकी संप्रभुता को स्वीकार नहीं करते हैं!

(5) स्वर्गदूत लोगों को उनके पापों से नहीं बचा सकते परन्तु यीशु मसीह लोगों को उनके पापों और उनके मृत्यु के भय से बचाता है।

इब्रानियों 2:7 में हम पढ़ते हैं कि अपने देहधारण से यीशु मसीह स्वर्गदूतों की तुलना में थोड़ा कम बना। यीशु मसीह ने मानव जाति का सच्चा प्रतिनिधि बनकर भजन संहिता 8:5-6 के शब्दों को पूरा किया। उसने स्वयं को उस अवस्था तक नम्र किया जो स्वर्गदूतों की तुलना में कम थी और पापी और खोए हुए व्यक्ति की अवस्था को ले लिया (फिलिप्पियों 2:5-8)।

इब्रानियों 2:14-16 में हम पढ़ते हैं कि शैतान के पास मृत्यु पर अधिकार था, परन्तु यह कि यीशु मसीह ने मृतकों से पुनरुत्थान द्वारा उसे नपुंसकता तक कम कर दिया। प्राकृतिक लोगों के लिए शारीरिक मृत्यु एक भययोग्य वास्तविकता है। और शैतान मृत्यु के इस भय का उपयोग लोगों को डराने-धमकाने के लिए करता है, लोगों को उसकी इच्छा के लिए मजबूर करते हुए। हालाँकि, जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, उनके लिए मृत्यु का अर्थ पाप के कारण न्याय और एक भयानक बंधन से एक आशीष और इस संसार में से दु:खों की अंतिम मुक्ति के रूप में बदल दिया गया है।

जब एक मसीही की मृत्यु हो जाती है, तो मृत्यु यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के चरित्र पर ले जाएगी (लूका 23:46)! मसीही की आत्मा तुरंत ऊपर स्वर्ग में मसीह के पास पहुँचती है (लूका 23:43; फिलिप्पियों 1:23), परन्तु उसका शरीर अस्थायी रूप से कब्र में रहता है जब तक कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं हो जाता। शारीरिक मृत्यु उन्हें कभी भी परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:38-39)! यीशु मसीह स्वर्गदूतों को बचाने के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों का छुटकारा करने के लिए आया था, जो उस पर विश्वास करते हैं!

3. यीशु मसीह के जीवन में स्वर्गदूत।

---

[3] परन्तु प्रेरितों के काम 7:55 पर ध्यान दें - यीशु स्तिफनुस का स्वागत करने के लिए खड़ा हो गया!

(1) स्वर्गदूतों ने यीशु मसीह के आने की घोषणा की।

539 ईसा पूर्व में, स्वर्गदूत जिब्राएल ने दानिय्येल को यीशु मसीह के आने की घोषणा की (दानिय्येल 9:21-27)। उसके पश्चात उसने जकर्याह को यीशु मसीह के अग्रदूत, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जन्म की घोषणा की (लूका 1:5-25)। उसने मरियम को भी जन्म और यीशु मसीह के मानवीय और अलौकिक स्वभाव की घोषणा की (लूका 1:26-38)। उसके पश्चात एक स्वर्गदूत एक सपने में यूसुफ को दिखाई दिया और यीशु मसीह के कुंवारी द्वारा जन्म की घोषणा की (मत्ती 1:18-25)।

(2) यीशु मसीह के देहधारण के दौरान स्वर्गदूत।

जब वह पैदा हुआ, एक स्वर्गदूत ने यीशु के जन्म की घोषणा चरवाहों को की और स्वर्गदूतों की एक बड़ी टुकड़ी प्रकट हुई और परमेश्वर की प्रशंसा की (लूका 2:8-15)। थोड़ी देर पश्चात, एक स्वर्गदूत एक सपने में यूसुफ को दिखाई दिया, उसे मरियम और यीशु के साथ मिस्र को भागने का आदेश दिया, क्योंकि राजा हेरोदेस ने उसे मारने की योजना बनाई थी (मत्ती 2:13-18)। उसके पश्चात एक स्वर्गदूत एक सपने में यूसुफ को दिखाई दिया, उसे इस्राएल की भूमि पर लौटने का आदेश दिया (मत्ती 2:19-23)।

जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई को आरम्भ किया, उसकी शैतान द्वारा परीक्षा होने के पश्चात, स्वर्गदूतों ने आकर उसकी सेवा की (मत्ती 4:11)। तीन वर्ष पश्चात, जब यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ने से पहली रात को गतसमनी में प्रार्थना की, तो एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और उसे बलवंत किया (लुका 22:43-44)। जब तलवारों और लाठियों को लिए एक बड़ी भीड़ ने यीशु को गिरफ्तार किया, तो यीशु ने पतरस से कहा कि वह अपने पिता को पुकार सकता है और बारह से अधिक स्वर्गदूतों की सैन्य पलटनों को तुरंत उसके लिए भेज दिया जाएगा। हालाँकि, यीशु ने पवित्रशास्त्र को पूरा करने और पापियों को बचाने हेतु मरने के लिए उनकी सहायता को न बुलाना चुना (मत्ती 26:52-56)।

(3) यीशु मसीह की बढ़ाई के दौरान स्वर्गदूत।

स्वर्गदूत यीशु मसीह के *पुनरुत्थान* के समय उपस्थित थे (मत्ती 28:1-7, मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-8; यूहन्ना 20:10-13)। एक स्वर्गदूत ने कब्र के पत्थर को लुढ़का दिया, यीशु को बाहर निकालने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को यह देखने हेतु कब्र में जाने के लिए कि वह पुनर्जीवित हो गया है। इस स्वर्गदूत का रूप विस्मयकारी था और पहरेदार उससे भयभीत थे "और मृत पुरुषों के समान हो गए" (मत्ती 28:4)। कब्र के आस-पास कई स्वर्गदूत घूम रहे थे जब महिलाएँ यीशु के शव पर मसाला लगाने आई। स्वर्गदूतों ने कहा, "तुम जीवित को मृतकों के बीच क्यों ढूंढ रही हो? वह यहाँ नहीं है; वह जी उठा है" (लूका 24:5-6)!

चालीस दिन पश्चात, जब यीशु स्वर्ग में उठाया गया, दो स्वर्गदूत उसके चेलों के साथ खड़े हो गए और यीशु के दूसरे आगमन की घोषणा की (प्रेरितों के काम 1:10-11)। प्रकाशितवाक्य 5:1-14 यीशु मसीह के स्वर्ग में उठाए जाने के तुरंत बाद स्वर्ग में उसके *सिंहासनारूढ़* का वर्णन करता है। केवल यीशु मसीह ही दोनों ओर लिखित पुस्तक की मुहरों को तोड़ने के लिए योग्य था, क्योंकि क्रूस पर एक बलि मेमने के रूप में केवल उसकी मृत्यु हुई थी और केवल उसने मृतकों में से अपने पुनरुत्थान के माध्यम से विजय प्राप्त की थी। केवल यीशु मसीह उसको प्रकट और निष्पादित कर सकते हैं जो परमेश्वर के उद्धार और न्याय के इतिहास के विषय में पुस्तक में लिखा गया था। उनके सिंहासनारूढ़ पर, परमेश्वर के सिंहासन के मध्य में खड़े हुए, चार जीवित प्राणी, चौबीस प्राचीन और अनगिनत स्वर्गदूतों ने उसकी महिमा की प्रशंसा करने के लिए गाया: "वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है" (प्रकाशितवाक्य 5:12)! और पृथ्वी पर उपस्थित प्रत्येक प्राणी ने उस स्तुति की गूंज उठाई।

1 पतरस 3:22 और इफिसियों 1:21 में हम पढ़ते हैं कि मसीह अब परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है, जिसमें स्वर्गदूत, अधिकारी और शक्तियाँ स्वयं को उसे समर्पित कर रहे हैं। इफिसियों 1:22 और इब्रानियों 2:5 में हम पढ़ते हैं कि अब से दुनिया स्वर्गदूतों के अधीन नहीं थी, परन्तु यह कि परमेश्वर ने सभी चीजों को यीशु मसीह के पाँव के नीचे कर दिया और उसे प्रत्येक चीज पर मुखिया होने के लिए नियुक्त किया।

(4) यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दौरान स्वर्गदूत।

मत्ती 24:30-31 और 25:31-32 में हम पढ़ते हैं कि सभी राष्ट्र यीशु मसीह को सामर्थ और महान महिमा के साथ लौटते देखेंगे। यीशु मसीह अपने स्वर्गदूतों को एक जोर से तुरही की ध्वनि के साथ भेजेगा और वे प्रत्येक स्थान से मसीह के चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे और लोगों को अंतिम न्याय में एक दूसरे से अलग करेंगे। मत्ती 13:24-43 और 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10 में हम पढ़ते हैं कि यीशु मसीह अपने राज्य से उन सभी चीजों को उखाड़ फेंकने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा जिसके द्वारा पाप होता है और उन सभी सभी को जो दुष्टता करते हैं। स्वर्गदूत तब उपस्थित होंगे जब यीशु मसीह उन्हें अनन्तकाल के विनाश से दंडित करेगा और उन्हें अपनी उपस्थिति से बाहर कर देगा। स्वर्गदूत तब उपस्थित होंगे जब यीशु मसीह उनको स्वीकार करेगा जो उससे संबंधित हैं, क्योंकि उन्होंने पृथ्वी पर लोगों के बीच यीशु मसीह को स्वीकार किया था (लूका 12:8-9)। और स्वर्गदूत तब उपस्थित होंगे जब यीशु मसीह प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा (मत्ती 16:27)।

ग. स्वर्गदूत और विश्वासी

1. स्वर्गदूत मसीहियों को देखते हैं।

मसीही कलीसिया के माध्यम से परमेश्वर के कार्य में स्वर्गदूतों की बहुत रुचि है। कलीसिया स्वयं के लिए अस्तित्व में नहीं है, परन्तु परमेश्वर और परमेश्वर की महिमा के लिए! परमेश्वर यीशु मसीह और उसके प्रेरितों के माध्यम से लोगों को अपनी भिन्न प्रकार की बुद्धि का ज्ञान कराता है (इब्रानियों 1:1-2; 1 पतरस 1:10-12क), परन्तु स्वर्गदूतों को मसीही कलीसिया के माध्यम से (इफिसियों 3:10; 1 पतरस 1:12ख)। कलीसिया एक दर्पण है जिसमें परमेश्वर की भिन्न प्रकार की उत्कृष्टताएँ प्रतिबिंबित होती हैं और स्वर्गदूत कलीसिया की प्रगति में बहुत रुचि रखते हैं। परमेश्वर की बुद्धि प्रतीत होते

कट्टर विरोध में मिलान करवाती है: यीशु मसीह में परमेश्वर मृत्यु के माध्यम से जीवन उत्पादित करता है और यहूदियों और गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) में मिलान करवाता है, जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं।

स्वर्गदूत देखते हैं और आनन्दित होते हैं जब किसी भी धार्मिक या धर्मनिरपेक्ष पृष्ठभूमि के पापी पश्चाताप के लिए आते हैं (लुका 15:10)। स्वर्गदूत निरंतर यह देखने के लिए दृष्टि डालते हैं कि क्या मसीही बाइबल के निर्देशों के अनुसार अपना मसीही जीवन जीते हैं और क्या वे बिना पक्षपात के परमेश्वर की सेवा करते हैं (1 तीमुथियुस 5:21)। स्वर्गदूत दृष्टि डालते हैं और वे देखते हैं कि कैसे मसीहियों को यीशु मसीह में उनके विश्वास के लिए सताया जाता है (1 कुरिन्थियों 4:9)। फिर भी, परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूतों को मुक्ति सेना के रूप में कार्य करने से मना किया है (सीएफ। मत्ती 26:52-53), क्योंकि दुष्टता की शक्तियों पर निश्चित विजय का क्षण अभी तक नहीं आया है। परमेश्वर ने मसीहीयों को तथाकथित "पवित्र युद्धों" को लड़ने से भी मना किया है!

स्वर्गदूत पुरुष से महिला के निर्माण के समय उपस्थित थे और वे आज भी देख रहे हैं कि क्या महिलाएँ परमेश्वर के सृजन अध्यादेश को मान्यता देना जारी रख रही हैं या नहीं (1 कुरिन्थियों 11:10)। परमेश्वर का रचना अध्यादेश यह है कि मसीही महिलाओं को यह पहचानना चाहिए कि वे पुरुष के लिए और पुरुष की महिमा के लिए बनाई गई थी और इसलिए उन्हें यह पहचानना चाहिए कि परमेश्वर ने पुरुष को स्त्री का सिर बनाया है (उत्पत्ति 2:18; 1 कुरिन्थियों 11:2,7,9)। इसका अर्थ यह है कि महिलाओं को पुरुषों के अधीन होना चाहिए मसीही विवाह में (इफिसियों 5:22-25; कुलुस्सियों 3:18-19) और मसीही कलीसिया के कार्यों में (1 कुरिन्थियों 14:33-38; 1 तीमुथियुस 2:11-14; 3:2)। यह जानने को कि परमेश्वर के स्वर्गदूत उसे निरन्तर देख रहे हैं, एक औरत के लिए विवाह में अपने पति और मण्डली में प्राचीनों (पुरुषों के रूप में) के अधीन होना आसान बनाना चाहिए।

2. स्वर्गदूत मसीहियों को दिखाई देते हैं और मसीहियों से बात करते हैं।

स्वर्गदूत जिब्राएल ने दानिय्येल को दर्शन समझाए (दानिय्येल 8:15-19; 9:20-23)। इसी स्वर्गदूत ने मरियम को यीशु मसीह के जन्म और स्वभाव की घोषणा की (लुका 1:26-38)। एक स्वर्गदूत ने यूसुफ को खतरे के विषय में चेतावनी दी और सुरक्षा तक उसका मार्गदर्शन किया (मत्ती 2:13-19)। एक स्वर्गदूत ने प्रेरितों को सबके सामने सुसमाचार का प्रचार करने का निर्देश दिया (प्रेरितों के काम

5:17-20)। एक स्वर्गदूत ने प्रचारक फिलेप्पुस को निर्देश दिया कि यह कैसे सुनिश्चित करना है कि इथियोपिया का एक सरकारी अधिकारी सुसमाचार सुने (प्रेरितों के काम 8:26)। कभी-कभी स्वर्गदूत मसीहियों से यह कहते हुए कार्य करने का आग्रह करते हैं, "जल्दी उठो!" क्योंकि खोया हुआ समय कभी नहीं लौटता है (प्रेरितों के काम 12:7)।

3. स्वर्गदूत सुसमाचार की घोषणा को बढ़ावा देते हैं।

स्वर्गदूत सुसमाचार का प्रचार नहीं करते हैं, परन्तु परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों का उपयोग *मसीहियों द्वारा सुसमाचार की घोषणा को संभव करने के लिए* करता है। एक स्वर्गदूत ने प्रेरितों को यहूदी मंदिर में सार्वजनिक रूप से सुसमाचार का प्रचार करने का निर्देश दिया (प्रेरितों के काम 5:17-20)। एक स्वर्गदूत ने प्रचारक फिलेप्पुस को निर्देश दिया कि एक इथियोपियाई सरकार के अधिकारी को सुसमाचार प्रचार करने के लिए *कहाँ* जाना है (प्रेरितों के काम 8:26)। एक स्वर्गदूत ने रोमी सैन्य अधिकारी कॉर्नेलियस को प्रेरित पतरस के पास पहुँचाया, ताकि वह और उसके रिश्तेदार और मित्र सुसमाचार सुन सकें (प्रेरितों के काम 10:1-8,22,30-33)। एक स्वर्गदूत ने पतरस को जेल से छुड़ाया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इस महान प्रेरित ने सुसमाचार का दूर-दूर तक प्रचार किया (प्रेरितों के काम 12:5-11)। एक स्वर्गदूत पौलुस को दिखाई दिया, यह सुनिश्चित करने के लिए कि जहाज टूटने के दौरान प्रेरित की मृत्यु नहीं होगी, परन्तु पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली शासक,

रोम के कैसर के सामने स्वयं को खड़ा करेगा, (ताकि वह संभवत: मसीह के विषय में गवाही दे सके) (प्रेरितों के काम 27:22-25)।

4. स्वर्गदूत मसीहियों के स्थान पर कार्य करते हैं।

(1) स्वर्गदूत परमेश्वर लोगों की रक्षा करते हैं।

स्वर्गदूत उन लोगों को चारों ओर से घेरते हैं और छुटकारा प्रदान करते हैं जो परमेश्वर का भय मानते हैं और परमेश्वर के तरीकों पर निर्भर करते हैं (भजन संहिता 34:7; 91:1,11-12)। परमेश्वर के स्वर्गदूत अलीशा और उसके नौकर के चारों ओर शत्रुओं के सैनिकों की एक पूरी सेना के विरुद्ध उनकी रक्षा करने के लिए आग के घोड़ों और रथों के रूप में दिखाई दिए जो भविष्यवक्ता को पकड़ने के लिए आए थे (2 राजा 6:14-17)।

जब दानिय्येल के तीन मित्रों को जीवित परमेश्वर में उनके विश्वास के कारण सताया गया, तो उन्हें बांध दिया गया और एक धधकती हुई भट्टी में फेंक दिया गया। तथापि, एक स्वर्गदूत धधकती हुई भट्टी के भीतर आया, उनके बंधन खोले और उन्हें आग की लपटों से बचाया। "क्षत्रप, हाकिम, राज्यपाल और शाही सलाहकार उनके चारों ओर भीड़ लगाए हुए थे। उन्होंने देखा कि आग ने उनके शरीर को नुकसान नहीं पहुँचाया था, न ही उनके सिर का बाल तक झुसला था; उनके लबादे जले नहीं थे, और उन पर आग की

कोई गंध नहीं थी" (दानिय्येल 3:27)। बाद में दानिय्येल स्वयं जीवित परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता के कारण सताया गया और उसे भूखे शेरों की मांद में फेंक दिया गया। हालाँकि, एक स्वर्गदूत शेरों की मांद में आया और शेरों के मुंह बंद कर दिए। उन्होंने दानिय्येल को चोट नहीं पहूँचाई और दानिय्येल पर कोई घाव नहीं मिला (दानिय्येल 6:22-23)।

यीशु के पास लाए गए बच्चों के संबंध में, यीशु ने कहा, "देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का चेहरा सदा देखते हैं" **(मत्ती 18:11)**। यीशु ने अपने शिष्यों को चेतावनी दी कि वे बच्चों (या जिन लोगों का रवैया बच्चों जैसा है) को महत्वहीन न समझें। परमेश्वर उन्हें इतना सम्मान देता है कि उसने उन पर दृष्टि रखने के लिए अपने सबसे शानदार स्वर्गदूतों को भी नियुक्त किया है। वाक्यांश "स्वर्गदूत जो परमेश्वर का चेहरा देखते हैं" स्वर्गदूतों के एक निश्चित वर्ग तक सीमित नहीं है, परन्तु सभी स्वर्गदूतों, यहां तक कि उच्चतम रैंकिंग स्वर्गदूत भी शामिल हैं। और वाक्यांश ष्उनके स्वर्गदूत छोटे बच्चों के स्वर्गदूतों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उन सभी लोगों के स्वर्गदूत भी शामिल हैं जो छोटे बच्चों के समान बन जाते हैं, अर्थात, सच्चे मसीही। यह पद यह नहीं सिखाता है कि प्रत्येक मसीही का अपना अलग-अलग संरक्षक स्वर्गदूत होता है, परन्तु यह ये सिखाता है कि स्वर्ग के सभी स्वर्गदूत संसार के सभी मसीहियों पर दृष्टि रखते हैं। ये स्वर्गदूत लोगों और परमेश्वर के बीच बिचवई नहीं हैं और वे इन लोगों की ओर से परमेश्वर से बात नहीं करते हैं। स्वर्गदूत केवल परमेश्वर के लोगों का ध्यान रखते हैं और मसीहीयों के उद्धार और प्रगति में गहरी रुचि रखते हैं (1 पतरस 1:12)।

यीशु मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच मसीहियों के क्लेश के दौरान, स्वर्गदूतों ने जीवित परमेश्वर की मुहर परमेश्वर के सेवकों के माथे पर लगाई, अर्थात, सभी मसीहियों पर (प्रकाशितवाक्य 7:1-4; सीएफ। 22:3)। यह एक आलंकारिक संकेत है कि परमेश्वर उन्हें दुष्टता और नुकसान से बचाता है, शायद इसलिए कि वे परमेश्वर के लिए जी सकें और परमेश्वर की सेवा कर सकें और कि वे पृथ्वी पर परमेश्वर के वर्तमान न्यायों के तहत नहीं आएंगे (सीएफ। यहेजकेल 9:3-6; प्रकाशितवाक्य 9:4)।

(2) स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों को बचाते हैं।

स्वर्गदूत ने सुसमाचार की निरंतर घोषणा को सुनिश्चित करने के लिए जेल से प्रेरितों को बचाया (प्रेरितों के काम 5:17-20)। एक स्वर्गदूत ने पतरस को जेल से छुड़ाया, उसकी कलाई के चारों ओर की जंजीरों को तोड़ते हुए, दरवाजे खोलते हुए और जेल प्रहरियों की आँखें बंद करते हुए, ताकि पतरस सुसमाचार प्रचार करना जारी रख सके (प्रेरितों के काम 12:5-11)!

(3) स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रदान करते हैं।

यहोवा के स्वर्गदूत ने थके, भूखे और निराश नबी एलिय्याह को पानी और भोजन दिया। उसने उसे छुआ और उसे बलवंत किया ताकि वह बहुत लंबी और कठिन यात्रा कर सके (1 राजा 19:1-19)।

(4) स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन करते हैं।

एक स्वर्गदूत ने अब्राहम के नौकर की यात्रा का मार्गदर्शन किया और इसहाक के लिए एक उपयुक्त पत्नी खोजने में उसकी सहायता की (उत्पत्ति 24:7,40)।

(5) स्वर्गदूत परीक्षणों के बीच परमेश्वर के लोगों को बलवंत करते हैं।

एक स्वर्गदूत ने यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहली रात को उसकी प्रार्थना के दौरान बलवन्त किया (लूका 22:40-44)। एक स्वर्गदूत ने पौलुस को प्रोत्साहित किया जब वह समुद्र में एक हिंसक तूफान में फंस गया था और उसका जहाज टूट गया था (प्रेरितों के काम 27:21-26)। जब कोई विश्वासी मरता है तो स्वर्गदूत उपस्थित होते हैं। वे एक मृत विश्वासी को सीधे परमेश्वर की उपस्थिति में ले गए (लूका 16:22; फिलिप्पियों 1:23)।

(6) स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों की ओर से लड़ते हैं।

परमेश्वर के स्वर्गदूत शैतान के स्वर्गदूतों से लड़ते हैं (दानिय्येल 10:12-14,20-21)। हालाँकि, फारस और यूनान के सांसारिक साम्राज्य निर्वासन में परमेश्वर के लोगों पर अधिक शक्तिशाली थे, उनके संबंधित दुष्ट स्वर्गदूत राजकुमारों पर परमेश्वर के लोगों के पवित्र स्वर्गीय राजकुमार ने विजय प्राप्त कर ली थी। परमेश्वर पृथ्वी पर लोगों और घटनाओं को पूर्ण नियंत्रण में किए हुए है और समय से पहले घोषणा करता है कि परमेश्वर के लोग पूर्ण रीति से विजयी होंगे (दानिय्येल 10:12-14,20-21; रोमियों 8:37-39; प्रकाशितवाक्य 17:14)।

घ. स्वर्गदूत और अविश्वासी

पूरे इतिहास में स्वर्गदूत बसे हुए ब्रह्मांड पर परमेश्वर के प्रशासन को चलाए रखने हेतु व्यस्त रहें हैं। वे पृथ्वी पर परमेश्वर की विश्वासियों और अविश्वासियों की संभावित देखभाल को निष्पादित करते हैं (प्रेरितों के काम 14:17)। वे साधन हैं जब परमेश्वर पृथ्वी पर विश्वासियों को बचाता है। वे तब भी साधन होते हैं, जब परमेश्वर अवज्ञाकारी राष्ट्रों और लोगों पर अपने न्यायों को निष्पादित करता है। इतिहास के अंत में, जब यीशु मसीह इस धरती पर लौटेगा, तो स्वर्गदूत उन लोगों पर परमेश्वर के अंतिम न्याय को निष्पादित करेंगे जो उसके प्रेम और यीशु मसीह में उसके उद्धार को अस्वीकार करते हैं।

1. यहोवा के स्वर्गदूत ने राजा दाऊद का न्याय किया।

यहोवा के स्वर्गदूत ने राजा दाऊद को दंडित किया क्योंकि उसने परमेश्वर की अवज्ञा की थी (1 इतिहास 21:14-30)।

2. यहोवा के स्वर्गदूत ने शत्रु सैनिकों की एक पूरी सेना का न्याय किया।

यहोवा के स्वर्गदूत ने एक रात में शक्तिशाली अश्शूरियाई सेना के 1,85,000 सैनिकों को मार डाला, क्योंकि उनके सेनापति ने जीवित परमेश्वर का अपमान किया था (2 राजा 19:9-19)।

3. एक स्वर्गदूत ने शैतान को बाँधने के द्वारा उसका न्याय किया।

एक सर्वनाश से संबंधित चित्र के रूप में, एक अकेले स्वर्गदूत ने अजगर को बांध दिया। उसने शैतान को इस हद तक नपुंसकता में घटा दिया कि शैतान अब पृथ्वी पर किसी भी राष्ट्र से सुसमाचार की घोषणा को दूर नहीं रख सकता (प्रकाशितवाक्य 20:1-3)। यह *स्वयं यीशु मसीह का सर्वनाश से संबंधित एक चित्र है, जिसने* 2000 वर्ष पहले अपने पहले आगमन पर *शैतान को बाँध दिया था* (सीएफ। मत्ती 12:29-30; 24:14; यूहन्ना 12:31-32; प्रकाशितवाक्य 12:7-9)!

4. प्रभु के स्वर्गदूत ने एक अभिमानी राजनीतिक नेता का न्याय किया।

राजा हेरोद ने न केवल यीशु के कार्य का विरोध उसके सेवकों की हत्या करके (प्रेरितों के काम 12:1-2) और उसके सेवकों को बंदीगृह में डाल कर किया (प्रेरितों के काम 12:3-18), परन्तु अभिमानपूर्वक लोगों की भीड़ को उसे एक परमेश्वर के पद तक ऊँचा उठाने की अनुमति देकर भी! प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे नीचे पटका और जीवित होते हुए तब तक कीड़ों द्वारा उसे खाया गया जब तक वह मर नहीं गया (प्रेरितों के काम 12:19-24)। यह सभी राजनीतिक और धार्मिक नेताओं के लिए एक गंभीर चेतावनी है जब वे मसीहियों को सताते हैं और अपने देशों में स्वयं को महान राजनीतिक या धार्मिक नेता के रूप में स्थापित करते हैं।

5. स्वर्गदूत इस वर्तमान पृथ्वी पर दुष्टता का न्याय करता है।

स्वर्गदूत प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर के प्रति लोगों की असिद्ध प्रार्थनाओं के साथ यीशु मसीह की सिद्ध प्रार्थनाओं का मिश्रण करता है। जब मसीहियों की सीमित और असिद्ध प्रार्थनाएँ ऊपर परमेश्वर के सिंहासन तक जाती हैं, तो उन्हें मसीहियों के लिए यीशु मसीह और उसकी प्रार्थनाओं द्वारा पूर्ण रीति से स्वीकार्य और सिद्ध बनाया जाता है। उन मसीहियों की प्रार्थनाओं के उतर में जो आध्यात्मिक युद्ध में शामिल हैं और पृथ्वी पर पीड़ित हो रहे हैं, परमेश्वर अपने स्वर्गदूत द्वारा प्रतीकात्मक रूप से पृथ्वी पर स्वर्ग से आग लगाता है, जो आवाजों (गड़गड़ाहट), गर्जन, बिजली और भूकंप के साथ होती है।

बिजली गिरने, गड़गड़ाहट और गरजने का संदेश है कि इतिहास में एक अनोखी घटना घटित होने के बिंदु पर है (उदाहरण के लिए, सब कुछ के मध्य में परमेश्वर का अपने सिंहासन पर होने का प्रकाशन, प्रकाशितवाक्य 4:5, मसीह के पहले आगमन और सिंहासनारूढ़, प्रकाशितवाक्य 5:1-14 से पहले आता है)। इसी प्रकार, मसीहियों की प्रार्थनाएँ पृथ्वी पर लोगों के ऊपर परमेश्वर के वर्तमान न्यायों से पहले आती हैं (प्रकाशितवाक्य 8:3-5)।

6. स्वर्गदूत पूरे इतिहास में परमेश्वर के चेतावनी न्यायों को निष्पादित करते आए हैं।

इस दुनिया में स्वर्गदूत *परमेश्वर के वर्तमान चेतावनी न्यायों* को पूरे इतिहास में निष्पादित करते आए हैं। उनके न्याय पृथ्वी, समुद्र, नदियों और ब्रह्मांड के विशाल हिस्सों को प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से

प्रभावित करते हैं (प्रकाशितवाक्य 7:1; 8:6-13; सीएफ। यहेजकेल 14:21), दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों के माध्यम से लोगों के प्राण या आत्मा को प्रभावित करते हैं। (प्रकाशितवाक्य 9:1-12) और लोगों के शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक कल्याण को भयानक युद्धों के माध्यम से जो राष्ट्रों के बीच होते हैं प्रभावित करते हैं (प्रकाशितवाक्य 9:13-19)। यीशु मसीह ने खुलासा किया कि ये सभी विपत्तियाँ आने वाले अंतिम न्याय की चेतावनियाँ हैं और साथ ही वे वर्तमान न्याय भी हैं जो धरती पर सभी लोगों को यीशु मसीह और दस आज्ञाओं के विरुद्ध अतिक्रमणों को जारी रखने हेतु पश्चाताप करने को कहते हैं (प्रकाशितवाक्य 9:20-21; सीएफ। निर्गमन 20:1-17)।

7. इतिहास के अंत में स्वर्गदूत परमेश्वर के अंतिम न्याय का निष्पादन करते हैं।

स्वर्गदूत इतिहास के अंत में पूरी पृथ्वी के *भविष्य के अंतिम न्याय* को भी निष्पादित करेंगे (प्रकाशितवाक्य 9:15,18; 15:1; 16:1-21; 19:17-18)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, स्वर्गदूत सबसे पहले परमेश्वर के चुने हुए लोगों को, अर्थात, सभी मसीहियों को, यीशु मसीह का हवा में स्वागत करने और उस पर अचम्भा करने के लिए इकट्ठा करेंगे (मत्ती 3:12क; 24:40क,41क; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13- 17; 2 थिस्सलुनीकियों 1:10)।

उसके पश्चात उसी दिन (मत्ती 25:31-32; यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों के काम 24:15), स्वर्गदूत अविश्वासियों और दुष्ट लोगों को मसीह के न्याय सिंहासन के सामने से भगाएंगे (मत्ती 3:12ख; 13:25,30,41,48; 24:40ख,41ख; 25:31-32)। हालाँकि सभी मसीहियों की दण्डित नहीं की जाएगा (यूहन्ना 5:24; 10:28; रोमियों 8:1), परन्तु उनके कामों का न्याय किया जाएगा (मत्ती 25:34-40; 1 कुरिन्थियों 15:12-15), गैर-मसीही, अविश्वासी और दुष्ट लोगों का न्याय किया जाएगा (सर्वनाश)। उन्हें और उनकी सभी दुष्ट प्रथाओं को नरक की आग में फेंक दिया जाएगा, जो शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई जगह है। वहाँ वे हमेशा के लिए रोएँगे और अपने दाँतों को पीसेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9; मत्ती 3:12ख; 13:36-43; 25:41-46; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)।